ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

किशोर बालक एवं बालिकाओं की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

Impact of Adolescent Boys and Girls on Their Academic Achievement

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 25/09/2020, Date of Publication: 26/09/2020

प्रेम प्रकाश पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षक प्रशिक्षण विभाग,
चरक इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

मनुष्य में स्वाभाविक रूप से प्रेम, क्रोध, जिज्ञासा, भय चेतना रूचि आकांक्षा आदि गुण हाते हैं, और इन गुणों का परिणाम स्वरूप ही मनुष्य समाज में क्रियाशील रहता है।

आज का युग विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं आर्थिक युग के नाम से जाना जाता है। आज हर व्यक्ति किसी न किसी लक्ष्य की प्राप्ति या अपनी आकांक्षा को मूर्त रूप देने में लगा हुआ है।

इस प्रकार यदि देखा जाये तो व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन काल संघर्षपूर्ण तथा चुनौतियों से भरा होता है। परन्तु मनोवैज्ञानिकों द्वारा किशोरावस्था को अत्यंत संघर्षपूर्ण काल माना गया है।

किशोरावस्था वह अवस्था है जिस अवस्था में परिवर्तन भावों तथा जीवन मूल्य का निर्धारण परिवार और समाज से सम्बन्ध बड़ों की अधीनता से मुक्ति आदि तत्व किशोरों के लिए चिन्ता तथा परेशानी का कारण हाते है।

इस अवस्था में भावात्मक, विकास, शारीरिक विकास तथा मानसिक विकास की तीव्रता के कारण व्यक्ति प्रभावित होता है। इस प्रकार शारीरिक मानसिक तथा भावात्मक विाकस के कारण बालक की आकांक्षा में भी परिवर्तन होता है। अतः इस अवस्था में बालक तथा बालिकाओं में अपनी आकांक्षा कें कारण भावात्मक परिवर्तन आ जाते हैं।

इन परिस्थितियों के फलस्वरूप उनकी आवश्यकताओं में भी परिवर्तन होते है। इस अवस्था में हुये परिवर्तन के कारण उनकी आकांक्षा स्तर भी परिवर्तित होने लगता है। व्यक्तिगत विभिन्नता के परिणामस्वरूप व्यक्ति की आकांक्षाओं में भी अन्तर पाया जाता है, और इस अन्तर का प्रभाव उसके जीवन के हर पहलू पर पड़ता है, तथा मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन काल, सामाजिक , आर्थिक, शैक्षिक तथा शारीरिक विकास, उसके आकांक्षा स्तर से प्रभावित होता है।

Man naturally possesses qualities like love, anger, curiosity, fear, consciousness, aspiration, etc., and as a result of these qualities, man remains active in society.

Today's era is known as Science Technology and Economic Age. Today every person is engaged in achieving some goal or materializing his aspiration. Thus, if seen, the entire life span of a person is full of struggle and challenges. But adolescents have been considered by psychologists to be a very struggling period.

Adolescence is the stage in which changes in sentiment and determination of life value, freedom from the subordination of elders in relation to family and society, etc. cause anxiety and trouble for adolescents.

In this state, a person is affected due to the intensity of emotional, development, physical development and mental development. In this way, the aspiration of the child also changes due to physical mental and emotional development. Therefore, in this stage, the boys and girls get emotional changes due to their aspiration.

As a result of these circumstances, their requirements also change. Due to the change in this stage, their aspiration level also starts changing. As a result of personal variation there is also a difference in the aspirations of a person, and this difference has an effect on every aspect of his life, and the entire life span, social, economic, educational and physical development of a human being is affected by his aspiration level. is.

मुख्य शब्द : शैक्षिक उपलब्धि, किशोरावस्था, बाल्यावस्था, शारीरिक विकास ।
Educational Achievement, Adolescence, Childhood, Physical Development

प्रस्तावना

बेकर एवं सीगल के अनुसार– "आकांक्षा मनुष्य को कुछ करने के लिए प्रेरित करती है और यही प्रेरणा उसके भविष्य का निर्धारण करती है''।

किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें एक विकासशील व्यक्ति बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर बढ़ता है। इस अवस्था को ''समस्या आयु'' कहते हैं।

हरलॉक ने कहा है कि ''किशोर दूसरों की अपेक्षा स्वयं के लिये अधिक एक समस्या होती है।''

इस कारण सम्भवतः किशोर व्यवस्था की नई भूमिका के साथ समायोजन नहीं कर पाता, फलतः वह भ्रानत अनिश्चित, एवं उत्सुक होता है।

स्टैनले हॉल के अनुसार – ''किशोरावस्था एक नया जन्म है, यह बड़े दबाव तनाव, और विरोध की अवस्था है''। क्योंकि इस अवस्था में शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास तेजी से होता है।

इस तीव्र परिवर्तन के कारण किशोर को प्रायः अस्थिरता की समस्या का सामना करना पड़ता है।

कल्पना की अधिकता के कारण प्रायः उनकी आकांक्षायें अपने चरम स्तर पर होती है। यही आकांक्षा उसे कार्य करने के लिए प्रेरित करती है, तथा आवश्यक दिशा शक्ति प्रदान करती है।

इस पृथ्वी पर पाये जाने वाले सभी प्राणियों में मानव ही सबसे अधिक क्रियाशील एवं चिन्तनशील प्राणी है, जन्म से ही मानव चेतन परिस्थितियों के प्रभाव के कारण चिन्तनशील होता है और उसी के कारण वह अपनी इच्छायें प्रकट करता है।

व्यक्ति अपनी आकांक्षा के कारण आस–पास के व्यक्तियों एवं वस्तुओं को देखकर स्वाभाविक रूप से क्रियाशील रहता है।

मानव जन्म से ही जिज्ञासु प्रकृति का होता है और इन जिज्ञासाओं के कारण ही उसके अन्दर अनेकों आकांक्षायें उत्पन्न होती है। यदि मनुष्य के अन्दर की आकांक्षायें समाप्त कर दी जाये तो उसका जीवन स्थिर सदृश्य हो जायेगा।

आकांक्षा स्तर

हम प्रतिदिन के जीवन में देखते हैं कि कुछ व्यक्ति जितनी क्षमता रखते हैं उससे भी कहीं अधिक कार्य करने की इच्छा प्रकट करते हैं। इस तरह से समाज में कुछ ऐसे भी व्यक्ति हैं जो अपनी क्षमता से भी कम कार्य करने की इच्छा प्रकट करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के कार्य करने की मात्रा तथा उस कार्य के प्रति सोंचने की मात्रा उसके आकांक्षा स्तर पर आधारित होती है और यहीं आकांक्षा व्यक्ति के लक्ष्य को निर्धारित करती है।[1]

आकांक्षा स्तर का अर्थ

आकांक्षा स्तर उस सीमा को निर्धारित करती है जिस सीमा तक एक व्यक्ति अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है।

जब कोई व्यक्ति एक कार्य कर रहा होता है तो वह अपने लिये एक नया स्तर बना लेता है। जिसे वह पाना चाहता है। इसे ही हम आकांक्षा स्तर कहते है। यदि व्यक्ति सफलता प्राप्त कर लेता है तो यह स्तर ऊँचा हो जाता है। परन्तु असफल होने पर व्यक्ति इसे नीचा कर देता है।[2]

एक ही प्रकार के जीवन ध्येय व्यक्तियों में विभिन्न आकांक्षा स्तर को विकसित कर सकते हैं। एक व्यक्ति जिसका जीवन–ध्येय शिक्षक बनना है, आकांक्षा स्तर के अनुरूप होता है किन्तु दो व्यक्तियों जो शिक्षक बनना चाहते हैं किस सीमा तक सफलता प्राप्त करना चाहते हैं यह आकांक्षा स्तर को स्पष्ट करता है।

समस्या की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जिसके द्वारा छात्रों के व्यवहार में परिमार्जन करने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा प्रक्रिया में संलग्न व्यक्ति विभिन्न स्तरों पर छात्रों के लिए शिक्षण उद्देश्य निर्धारित करते हैं, छात्रों ने शिक्षण उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को बताता है।

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रात्मक अभिव्यक्ति है। छात्रों ने किस सीमा तक अपनी बौद्धिक योग्यताओं का विकास किया है यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि का सूचक है।

शैक्षिक उपलब्धि दो शब्दों से मिलकर बना है Aducational + Achievement अर्थात् शिक्षा से सम्बन्धित कारकों के परिणामों को इसमें सम्मिलित किया जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

मनुष्य की आकांक्षा विशाल है। आकांक्षा की पूर्ति हेतु मनुष्य अनेकों कार्य सम्पादित करता रहता है। प्रायः यह देखा जाता है कि व्यक्ति जितना कार्य सम्पादित कर सकता है उससे अधिक करने की इच्छा प्रकट करता है। व्यक्ति के कार्य करने की मात्रा आकांक्षा पर निर्भर होती है। तथा यही आकांक्षा व्यक्ति के लक्ष्य को सही निर्धारित करती है। व्यक्ति के सोचने की मात्रा तथा कार्य करने की क्षमता भी भिन्न–भिन्न होती है। क्योंकि वैयक्तिक विभिन्ता के कारण शैक्षिक आकांक्षाओं का स्तर भी भिन्न–भिन्न होती है। कभी–कभी निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले बालको की शैक्षिक आकांक्षायें उच्च होती है क्योंकि उनके पास कार्य व आकांक्षा स्तर संम्पादित करने के लिए आवश्यक स्रोत नही होते है। जबकि औसत उपलब्धि वाले बालकों की शैक्षिक आकांक्षायें औसत या उच्च होती है। तथा उनके पास आकांक्षा स्तर को प्राप्त करने के लिए आवश्यक स्रोत भी रहते है। इस लघु शोध में चयनित समस्या का महत्व निम्न है।[3]

1. निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले बालकों की आकांक्षा स्तर का आवलोकन कर उनके उपलब्धि स्तर को उच्च करने हेतु, उचित वातावरण व सुविधा प्रदान की जा सकती है।
2. औसत शैक्षिक उपलब्धि वाले बालकों की आकांक्षा स्तर ज्ञात करके उनकी उपलब्धि स्तर में वृद्धि की जा सकती है।
3. उच्च शैक्षिक आकांक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि यदि निम्न स्तर की है तो उनकी उपलब्धि उन्नयन हेतु प्रोत्साहन प्रदान किया जा सकता है।

समस्या अभिकथन

प्रस्तुत शोध की समस्या कथन निम्न प्रकार है –

''किशोर बालक एवं बालिकाओं की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।''

प्रमुख पदों की संक्रियात्मक परिभाषा

किशोरावस्था

किशोरावस्था मनुष्य के जीवन की वह अवस्था होती है जो बाल्यकाल की समाप्ति पर प्रारम्भ होती है और प्रौढ़ावस्था के प्रारम्भ होने पर समाप्त होती है। मनोवैज्ञानिको ने इस अवस्था को प्रबल दबाव, तनाव, तूफान एवं संघर्ष का काल कहा है क्योकि इस अवस्था में शारीरिक, मानसिक, एवं संवेगात्मक विकास तेजी से होता है। इस तीव्र परिवर्तन के कारण किशोरों को प्रायः अस्थिरता का सामना करना पड़ता है।

आकांक्षा स्तर

आकांक्षा स्तर लक्ष्य या मूल्य प्राप्त करने की इच्छा आकांक्षा कहलाती है तथा लक्ष्यों और मूल्यों के प्रति व्यक्ति की इच्छा की तीव्रता आकांक्षा स्तर है। आकांक्षा स्तर से व्यक्ति के तत्कालिक लक्ष्य संकेत मिलता है, जिसे एक व्यक्ति प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है।

शैक्षिक उपलब्धि

शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा छात्रों के व्यवहार में कुछ पूर्व निर्धारित संशोधन करने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा प्रक्रिया में संलग्न व्यक्ति विभिन्न स्तर के छात्रों के लिए शिक्षण उद्देश्य निर्धारित करते है, तथा इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण अधिगम क्रियाओं का आयोजन करते है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति से है। छात्रों ने शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को बताता है।

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य छात्रो द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग विश्लेषण संश्लेषण तथा मूल्यांकन आदि योग्यताओं की मात्रात्मक अभिव्यक्ति से है शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा छात्रगण अपनी विभिन्न बौद्धिक योग्यताओं का विकास करते है यही उनकी उपलब्धि का सूचक होता है।

अध्ययन की परिसीमायें

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन को निम्नलिखित परिसीमाओं में परिसीमित किया है–

1. शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में केवल गोण्डा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया है।
2. शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में केवल यू0पी0 बोर्ड के हिन्दी माध्यम के छात्रों का चयन किया है।
3. शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में केवल कक्षा–8 के छात्रों को प्रतिदर्श के रूप में चुना है।
4. शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में आकांक्षा स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि के परिपेक्ष्य में अध्ययन किया है।
5. शोध अध्ययन में केवल किशोर बालक–बालिकाओं का चयन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी कार्य को सम्पादित करने का कुछ न कुछ उद्देश्य अवश्य होता है। उद्देश्यों के निर्धारण के अभाव में न तो कोई तैयार की जा सकती है न ही उसका क्रियान्वयन किया जा सकता हैं। उद्देश्यों के ज्ञान के आभाव में कोई कार्य करना अन्धेरे में तीर चलाने जैसा है।

उद्देश्यों के महत्व को स्वीकार करते हुए ''जान डूयूवी'' ने कहा कि ''जो कार्य लक्ष्य का ज्ञान करके किया जाता है वह सार्थक होता है उन्हें अर्थो के आधार पर कार्यकर्ता अन्य वस्तुओं से अर्थ खोजता है। पूर्व लक्षित उद्देश्य क्रिया को उचित दिशा में ले जाते है, तथा उसे सफल बनाते है।''

स्टीफन तथा मोर महोदय के अनुसार

''किसी शैक्षिक अनुसंधान परियोजना पर जब तक कार्य नहीं करना चहिए जब तक कि उस अध्ययन के परिणाम किसी मजत्वपूर्ण व्यक्ति एवं प्रक्रिया को प्रभवकारी ढंग से श्रेष्ठतम बनाने की संभावना प्रस्तुत नहीं कर देते।''

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य है–

1. किशोर बालकों की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. किशोर बालिकाओं की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

वास्तविक अध्ययन करने से पहले शोधकर्ता अनुमान लगता है कि अध्ययन के बाद किस तरह का परिणाम प्राप्त होगा साधारण अर्थ में इसी अनुमान को परिकल्पना कहते है।

करलिंगर (1978) के अनुसार ''परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के बीच सम्बन्ध का अनुमानात्मक कथन है।''

मैकगूमन (1969) के अनुसार ''परिकल्पना वह कथन, प्रस्ताव या अभिधारणा है जो कुछ तथ्यों की अतंरिम व्याख्या का काम करती है।''

करलिंगर (1964) ने परिकल्पनाओं को निम्नलिखित प्रकारों में विभाजित किया है–

1. सरल परिकल्पना (Simple Hypothesis)
2. अन्तर (Difference Hypothesis)
3. शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis)
4. तात्विक परिकल्पना (Substandial Hypothesis)
5. सांख्यिकी परिकल्पना (Statistical Hypothesis)

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया था–

H_1

किशोर बालकों की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव है।

H_2

किशोर बालिकाओं की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव है।

H_{01}

किशोर बालको की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक पर कोई सार्थक प्रभाव नही है।

H_{02}

किशोर बालिकाओं की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

साहित्यावलोकन

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषो, पत्र–पत्रिकाओं तथा प्रकाशित–अप्रकाशित शोध प्रबन्धों से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं शोध कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधान कार्य को करना अन्धेर में तीर चलाने जैसा है। इसके अभाव में अनुसंधानकर्ता एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता।

बेस्ट के अनुसार– ''व्यावहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालय से प्राप्त किया जा सकता है।''

सी0वी0 गुड के अनुसार –मुद्रित साहित्य के अपार भण्डार की कुंजी अर्थपूर्ण समस्या एवं विश्लेषणीय परिकल्पना के स्रोत के द्वारा खोल देती है तथा समस्या के परिभाषीकरण, अध्ययन की विधि के चुनाव तथा प्राप्त सामग्री के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायता करती है। वास्तव में रचनात्मकता मौलिकता तथा चिन्तन के विकास हेतु मौलिक अध्ययन आवश्यक है।

यह देखा गया है कि सम्बन्धित साहित्य की खोज अत्यधिक समयसाध्य एवं श्रमसाध्य कार्य है तथापि प्रत्येक अनुसंधानकर्ता को यह करना ही चाहिये। अनुसंधानकर्ता को उचित सम्बन्धित साहित्य की खोज करते रहना चाहिये क्योंकि यह एक फलप्रदायक कार्य है।

गुड बार एवं स्केट्स ने साहित्य के सर्वेक्षण के अधालिखित उद्देश्य बताये है''

1. सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से यह पता चल जाता है कि क्या उपलब्ध प्रमाण समस्या का उचित समाधान प्रस्तुत करते है?
2. यह सर्वेक्षण उन सिद्धान्तों व्याख्याओं तथा परिकल्पनाओं को विचार प्रदान करता है जो अध्ययन समस्या के निर्माण हेतु आवश्यक है।
3. समस्या सामाधान हेतु समुचित विधि का सुझाव देता है।
4. तुलनात्मक आँकड़ों की प्राप्ति तथा विश्लेषण में सहायता देता है।
5. अनुसन्धानकर्ता के ज्ञान कोश में महत्वपूर्ण वृद्धि करता है।
6. यह अनुसंधान के लिये सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि का स्पष्ट करता है तथा विभिन्न सिद्धान्तों एवं निहित धारणाओं को समझने में सहायता करता है।
7. अनुसंधान हेतु लिये लिये गये क्षेत्र में कितना तथा किस प्रकार का कार्य हो चुका है यह बताता है?
8. लिये गये अनुसंधान में किस विधि का प्रयोग होगा? कौन से उपकरण ठीक होगें। किस प्रकार की सांख्यिकीय का प्रयोग उचित होगा? यह बताता है।
9. लिये गये अनुसंधान की सफलता एवं उसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।
10. समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणायें, सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।

सम्बन्धित अध्ययन

लघु शोध को आधार प्रदान करने के लिए सम्बन्धित क्षेत्र में पहले हो चुके शोध कार्य का अध्ययन अति आवश्यक है।

अनुसंधान विधि

प्रत्येक अनुसंधान एक विशेष प्रकृति की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है। यह समस्या की प्रकृति पर निर्भर करता है, कि अनुसंधान हेतु कौन सी विधि प्रयोग की जाये। अनुसंधान हेतु शोध विधियाँ अति महत्वपूर्ण होती है।

सामान्य रूप से अनुसंधान विधियों को निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. ऐतिहासिक अनुसंधान
2. प्रयोगात्मक अनुसंधान
3. वर्णनात्मक अनुसंधान

वर्णनात्मक अनुसंधान

सी0वी0 गुड के अनुसार ''वर्णनात्मक अनुसंधान का सम्बन्ध वर्तमान से होता है। वह वर्तमान के तत्वों, परिस्थितियों के सम्बन्ध में व्यक्तियों, वस्तुओं, घटनाक्रमों आदि के विषय में प्रदत्त एकत्रित कर उनका विश्लेषण तथा विवेचन, वर्गीकरण तथा मापन आदि का कार्य करता है।''

वर्णनात्मक अनुसंधान का सम्बन्ध अतीत से न होकर वर्तमान से होता है। वर्णनात्मक अनुसंधान को विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग नामों से पुकारा है। जैसे सर्वेक्षण अनुसंधान, विवरणात्मक अनुसंधान आदि। परन्तु यदि सूक्ष्मता से विचार किया जाये तो यह पाया जाता है कि सर्वेक्षण आदि वर्णनात्मक अनुसंधान न होकर वर्णत्मक अनुसंधान की विधियाँ है।''

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणों का परिचय

आकांक्षा स्तर के मापन हेतु

आकांक्षा स्तर के मापन हेतु शोधकर्ता ने डॉ. महेश भार्गव एवं स्व. प्रो. एम.ए. शाह द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मापनी का प्रयोग किया है। इसकी प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है–

विश्वसनीयता

इस उपकरण की विश्वसनीयता ''टेस्ट–रीटेस्ट'' विधि एवं ''अर्द्धविच्छेदी विधि'' द्वारा निर्धारित की गयी है। जो निम्न सारणी के अनुसार है–

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

तालिका : 2

Method	N	GDS	ADS	NTRS
Retast Method				
With a gap of 1 month	100	.88	.82	.86
With an interval of 3 month	60	.72	.75	.74
Split hall Method	60	.77	.69	.78

वैधता

यह माना गया है कि आकांक्षा स्तर के वैणता गुणांक के लिए कोई मापक यंत्र नहीं है। यद्यपि वैधता का प्रश्न आकांक्षा के अध्ययन से कोई सम्बन्ध नहीं रखता है, इस संदर्भ में मुथैया (1959) ने लिखा है कि आकांक्षा स्तर का व्यवहार नियत रहता है तथा यह मापन की पद्धति से मुक्त होता है, उनका तथ्य मान्य है क्योंकि वैधता का प्रश्न वहाँ उठता है जहाँ एक व्यवहार दूसरे व्यवहार से अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त किया जाता है इस स्थिति में प्रयोज्य उसके द्वारा बताये गये वास्तविक कार्य से सम्बन्धित होता है तथा परिस्थितियाँ उसके लिए वास्तविक होती है।

शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु

शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु अनुसंधानकर्ता ने डॉ. ए.के. सिंह एवं डॉ. (श्रीमती) ए. सेन गुप्ता द्वारा निर्मित "Genral Class Room Achiviement Text" नामक प्रमापीकृत परीक्षण का प्रयोग किया है। इस परीक्षण की प्रमुख विशेषतायें निम्नलिखित है।

विश्वसनीयता

100 छात्रों के न्यादर्श में 10 दिनों के अन्तराल पर G.C.A.T. (VIII) के लिए टेस्ट– रीटेस्ट विश्वसनीयता .782 थी। सह सम्बन्ध के पश्चात् G.C.A.T. (VIII) के लिए स्पिलिट हॉफ विश्वसनीयता .754 थी।

तालिका : 3

Group/Class	Test-Retest Relibility	Split-Half Reliability After Correlation
General Classroom Achievement test (VIII)(N=100)	.782	.754

वैधता

प्रस्तुत परीक्षण (G.C.A.T. Class VIII के लिए) की वैधता निम्नलिखित मानकों के आधार पर निर्धारित की गई है–

1. परीक्षा के अंक
2. शिक्षको की राय
3. साक्षात्कार में रेटिंग

तालिका : 4

Group/ Class	Examination Rank	Teacher's Opinion	Rating in Interview
G.C.A.T. (VIII) N=40	.683	.592	.683

परीक्षण का फलांकन एवं सारणीयन

शोधकर्ता ने सर्वप्रथम प्रायोज्य द्वारा आकांक्षा स्तर मापनी में कृत कार्य के रूप में बनाये हुए मानव शक्ल (Human Face) की गणना की तत्पश्चात प्रायोज्य द्वारा किये गये सभी प्रयासों के आधारों पर GDS (Goal Discrepancy Score) तथा ADS (Attainment Discrepancy Score) की गणना की गयी। तथा दोनों के आधार पर NTRS (Number of times the goal reach score) की गणना की गयी।

यह कार्य प्रत्येक प्रायोज्य हेतु दुहराया गया तथा NTRS के अनुसार प्रायोज्यों को तीन श्रेणियों (उच्च, औसत एवं निम्न आकांक्षा स्तर) में विभक्त किया गया तथा शैक्षिक उपलब्धि के परीक्षण में प्रायोज्य द्वारा अर्जित प्राप्तांको को उनके सम्मुख लिखा गया। शैक्षिक उपलब्धि की गणना मैनुअल में दी गयी स्कोरिंग की (अंकन कुन्जी) के अनुसार की गयी।

इसके उपरान्त बालको के निम्न एवं उच्च आकांक्षा स्तर समूहों को आधार बनाकर शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गयी तदोपरान्त टी–अनुपात ज्ञात किया गया। यही प्रक्रिया बालिकाओं के लिए भी अपनायी गयी।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ

शोधकर्ता द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या द्वारा निष्कर्ष एवं उचित परिणामों की प्राप्ति हेतु निम्न सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया–

मध्यमान (Mean)

किसी अंग सामग्री के समस्त अंको के योगफल को कुल संख्या से भाग देने पर प्राप्त भागफल को मध्यमान कहते है।[1]

$$M = \frac{\sum X}{N}$$

जहाँ,

$\sum X$ = प्राप्तांकों का योग

N = प्राप्तांकों की संख्या

मानक विचलन (Standered Deviation)

जेम्स ड्रेवर के अनुसार ''दिये हुये प्राप्तांकों के मध्यमान से प्राप्तांकों के विचलनों के वर्गो का मध्यमान का वर्गमूल प्रमाणित विचलन है।''

$$S.D. = \sqrt{\frac{\sum d^2}{N}} \quad \text{जब} \quad N < 30$$

जहाँ,

d = प्राप्तांकों का मध्यमान से विचलन

N = प्राप्तांकों की संख्या

t–परीक्षण

आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव देखने हेतु टी–परीक्षण का उपयोग किया गया।

$$\text{टी मान} = \frac{D}{\sigma_D}$$

जहाँ पर

D=मध्यमानों का अन्तर है। ($D = M_1 \text{、} M_2$)

$$\sigma_D = \sqrt{\frac{(S.D._1)^2}{n_1 - 1} + \frac{(S.D._2)^2}{n_2 - 1}}$$

जब n_1 व $n_2 < 30$

अतः प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध शोध में अनुसंधानकर्ता ले यह जाने या प्रयास किया है कि किशोर बालक एवं बालिकाओं का आकांक्षा स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करता है समस्या कथन इस प्रकार से हैः ''किशोर बालक एवं बालिकाओं की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

शोधकर्ता ने छात्रों के आकांक्षा स्तर को मापने हेतु ''डॉ. महेश भार्गव एवं स्व. प्रो0ए0एम0 शाह द्वारा निर्मित'' आकांक्षा स्तर मापनी नामक प्रमापीकृत उपकरण का प्रयोग किया। शोधकर्ता ने छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि मापने हेतु ''डॉ. ए.के. सिंह एवं डॉ. (श्रीमती) ए.सेन गुप्ता द्वारा निर्मित जनरल कलासरूम एचीवमेन्ट टेस्ट'' नामक प्रमापी कृत उपकरण का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत लघु शोध में आकांक्षा स्तर स्वतंत्र चर है जबकि शैक्षिक उपलब्धि आश्रित चर है।

शोधकर्ता ने अनिश्चित परिणामों की प्राप्ति हेतु ऑकड़ों का संग्रहण किया तथा उसके पश्चात आकांक्षा स्तर को उच्च, औसत और निम्न आकांक्षा समूहों में वर्गीकृत किया है। पुनः इस समूहों में से उच्च एवं निम्न आकांक्षा समूह को लेकर, उनकी शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान एवं एस0डी0 ज्ञात किया तथा दोनो समूहों पर मध्यमानों का टी–परीक्षण किया। परीक्षण के उपरान्त शोधकर्ता को परिणाम प्राप्त हुए।

अध्ययन के परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन से शोधकर्ता को निम्न परिणाम प्राप्त हुए।

अध्ययन के निष्कर्ष

किशोर बालको के आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

उद्देश्य 1

किशोर बालको के आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

H_1

किशोर बालको की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव है।

H_{01}

किशोर बालको की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

परिणाम

किशोर बालिकाओं के आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पवर सार्थक प्रभाव पाया गया।

उद्देश्य 2

किशोर बालिकाओं के आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

H_1

किशोर बालको की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव है।

H_{01}

किशोर बालको की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जेम्स ड्रेवर उद्धृत एस0पी0गुप्ता (1996) आधुनिक मनोविज्ञान शारदा, पुस्तक भवन, इलाहाबाद , पेज – 41*
2. *मुसोलिन उद्धृत हरिनारायन दुबे (1997) विश्व का इतिहास, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पेज – 163*
3. *दयानन्द सरस्वती उदधृत, पी0डी0 पाठक (1996) शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पेज–76*
4. *मैकेंजी उद्धृत, रमन बिहारी लाल (शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय सिद्धांत) पेज – 37*
5. *महात्मा गांधी उद्धृत, रामसकल पाण्डेय (2003) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा पेज– 473*
6. *अरविन्द घोष उद्धृत, सरोज सक्सेना (1996) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा पेज –413*
7. *चार्ल्स स्किनर उद्धृत लालसिंह एवं अन्य (2000) मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकीय के मूल आधार, हर प्रसाद भार्गव, आगरा, पेज – 276*
8. *हालम्वीस्ट उद्धृत एस0एस0 चौहान (1996) एडवॉस्ड एजूकेशनल साइकोलॉजी, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0, नई दिल्ली, पेज – 342*
9. *मैनुअल फार लेवल आस्परेशन, आगरा, 1975*
10. *जॉन डी0वी0 उदधृत, सरोज सक्सेना (1996) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्री आधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पेज–54*
11. *स्टीफन तथा मोर उदधृत, लोकेश कौल (2004) एजूकेशनल रिसर्च मैथडोलॉजी, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा0लि0 नई दिल्ली पेज–112*
12. *करलिंगर (1978) उदधृत, डी0एन0 श्रीवास्तव (2003) अनुसंधान विधियॉ, साहित्य प्रकाशन आगरा पेज 102*
13. *मैकगूमन (1969) उदधृत मो0 सुलेमान (2003) व्यवहारपरक विज्ञानो में शोध प्रणाली विज्ञान, शुक्ला बुक डिपो, पटना पेज–74*
14. *जे.डब्ल्यू. बेस्ट, रिसर्च इन एजूकेशन, 1996*
15. *राय, पारसनाथ, अनुसंधान परिचय, 2005*
16. *गुड बार एवं स्केट्स, मैथेडोलाजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, ए.सी.सी.एन.वाई. (104–105)*
17. *सक्सेना (1981) ''छात्रों की आवश्यकता, चिन्तन, आकांक्षा स्तर तथा सृजनात्मकता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन'', पी.एच.डी. उपाधि, शिक्षा शास्त्र विभाग, आगरा।*
18. *सिंह (1983), ''विज्ञान की निष्पत्ति पर डिप्राइचेशन तथा आकांक्षा स्तर के प्रभाव का अध्ययन'', पी.एच.डी. उपाधि, शिक्षा शास्त्र विभाग, गोरखपुर वि0वि0*
19. *तिवारी एवं मोर भट्ट (1983), ''किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में चिन्ता व आकांक्षा स्तर के प्रभाव का अध्ययन'', पी. एच.डी. मनोविज्ञान, सी.एस.जे.एम.यू.वि.वि. कानपुर।*
20. *एनामा (1984) ''केरल में कालेज विद्यार्थियों के मूल्य, आकांक्षा व समायोजना का अध्ययन।'' पी.एच.डी. उपाधि, शिक्षाशास्त्र केरल विश्वविद्यालय केरल।*

21. *कुशवाहा (1985), उद्घृत अजय मिश्रा (2003), ''रायबरेली शहर के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन।''*
22. *श्यामाचरण वर्मा, (1989–90) ''हरिजन छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पिछड़ेपन के प्रभाव का अध्ययन'' एम0एड0 लघु शोध सी0एस0जे0एम0यू0, कानपुर*
23. *रजन गौतम, (1990), ''अनुसूचित जाति के विद्यार्थियो के साथ अन्य जाति के विद्यार्थियों के रचनात्मक मूल्य, शैक्षिक– उपलब्धि और शिक्षा की ओर दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन'' शिक्षा शास्त्र में शोध आगरा विश्वविद्यालय*
24. *http://shodhganga.inflibnet.ac.in/jspui/bitstream/10603/218295/6/06_chapter%201.pdf*
25. *http://14.39.116.20:8080/jspui/bitstream/10603/218295/6/06_chapter%201.pdf*
26. *http://shodganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/25370/5/05_%20chapter-1.pdf*

अंत टिप्पणी

1. *गुप्ता एस0पी0, आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन*